जीविका चयन में संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता की भूमिका : एक संकल्पनात्मक अध्ययन

***रोहित कुमार एवं **प्रो० विनीता**
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश
आचार्य, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश

सारांश

जीविकाचयन की प्रक्रिया बहुआयामी होती है, जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन संवैगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence, EI) और सामाजिक दक्षता ;ैवबपंस ब्वउचमजमदबमद्ध के करियर निर्णय लेने पर प्रभाव को संकल्पनात्मक रूप से विश्लेषित करता है। संवैगात्मक बुद्धि व्यक्ति की अपनी भावनाओं को पहचानने, प्रबंधित करने और अन्य लोगों की भावनाओं को समझने की क्षमता को दर्शाती है, जबकि सामाजिक दक्षता प्रभावी संचार, टीम वर्क और पारस्परिक संबंधों को संभालने की योग्यता को इंगित करती है। विभिन्न शोधों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उच्च संवैगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति करियर से संबंधित कठिनाइयों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से करते हैं और अपनी करियर योजना को बेहतर ढंग से संचालित कर पाते हैं। इसी प्रकार, सामाजिक दक्षता से युक्त व्यक्तियों में बेहतर नेटवर्किंग कौशल, आत्मविश्वास और टीम समन्वय की क्षमता होती है, जिससे वे करियर के अवसरों का अधिक लाभ उठा सकते हैं। अध्ययन का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि करियर निर्णय लेने की प्रक्रिया में इन दोनों कारकों की पारस्परिक अंतःक्रिया महत्वपूर्ण होती है, विशेष रूप से उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के संदर्भ में। यह शोध शैक्षणिक संस्थानों के लिए भी उपयोगी है, क्योंकि यह करियर मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं को प्रभावी बनाने में सहायक हो सकता है। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह अनुशंसा की जाती है कि विश्वविद्यालयों में संवैगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षताको बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम और करियर काउंसलिंग सत्र आयोजित किए जाएं, जिससे विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता (Employability) में वृद्धि हो सके।

प्रमुख शब्द *: संवैगात्मक बुद्धि, सामाजिक दक्षता, करियर निर्णय, रोजगार क्षमता, उच्च शिक्षा।*

प्रस्तावना :

व्यक्ति के जीवन में जीविका चयन एक महत्वपूर्ण मोड़ होता है, जो उसकी पेशेवर सफलता, आत्म संतुष्टि, और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है। 21वीं सदी में, जब वैश्विक प्रतिस्पर्धा और तकनीकी प्रगति तेजी से बढ़ रही हैं, तब जीविका चयन चुनाव में सावधानीपूर्वक विचार और निर्णय–निर्माण प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। जीविका चयन केवल शैक्षिक योग्यता और तकनीकी कौशल पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह विभिन्न मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों से भी प्रभावित होता है। इनमें प्रमुख रूप से संवैगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) और सामाजिक दक्षता (Social Competence) की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। संवैगात्मक बुद्धि व्यक्ति को आत्म–जागरूकता, आत्म–नियंत्रण, और भावनात्मक समझ विकसित करने में सहायक होती है, जो कठिन परिस्थितियों में संतुलित निर्णय लेने में मदद करती है। वहीं, सामाजिक दक्षता व्यक्ति की पारस्परिक संवाद क्षमता, टीम वर्क, और सामाजिक अनुकूलनशीलता को मजबूत बनाती है, जिससे वह विभिन्न पेशेवर परिवेशों में प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है। आधुनिक समाज में जीविका चयन एक जटिल प्रक्रिया बन चुकी है, जहाँ छात्रों को न केवल अपने व्यक्तिगत हितों

और क्षमताओं को समझने की आवश्यकता होती है, बल्कि उन्हें सामाजिक नेटवर्क, उद्योग की मांगों, और विभिन्न जीविका चयन अवसरों के प्रति भी जागरूक रहना होता है। इस संदर्भ में, संवैगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता दो ऐसे महत्वपूर्ण कारक हैं जो किसी व्यक्ति के जीविका चयन निर्णय की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं।

इस शोध पत्र में, हम इस बात का विश्लेषण करेंगे कि संवैगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता करियर निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में किस प्रकार योगदान करते हैं। साथ ही, यह अध्ययन उन प्रमुख पहलुओं को उजागर करेगा, जो उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन क्षमताओं के संवर्धन के लिए आवश्यक हैं।

शोध की आवश्यकता और महत्व

जीविका चयन–निर्माण की प्रक्रिया केवल व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर निर्भर नहीं होती, बल्कि यह सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक कारकों से भी प्रभावित होती है। वर्तमान समय में, जहाँ करियर के अनेकों विकल्प उपलब्ध हैं, विद्यार्थी सही निर्णय लेने में असमंजस की स्थिति में होते हैं। इस असमंजस को दूर करने और एक सुव्यवस्थित निर्णय लेने के लिए संवैगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता जैसे कारकों को समझना आवश्यक हो जाता है। यह शोध इसलिए आवश्यक है क्योंकि :

1. **जीविका चयन में जटिलता**–आज के वैश्विक परिदृश्य में करियर निर्णय–निर्माण एक बहुआयामी प्रक्रिया बन चुका है, जिसमें तकनीकी प्रगति, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं का संतुलन आवश्यक है।
2. **संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका**–शोध यह स्पष्ट करेगा कि किस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को करियर संबंधी निर्णयों में आत्मविश्वास और स्थिरता प्रदान कर सकती है।
3. **सामाजिक दक्षता का प्रभाव**–यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करेगा कि कैसे सामाजिक दक्षता विद्यार्थियों को अपने जीविका चयन विकल्पों को प्रभावी ढंग से पहचानने और उन्हें प्राप्त करने में सहायता करती है।
4. **नीतिगत सिफारिशें**–यह शोध उच्च शिक्षा संस्थानों और करियर परामर्श दाताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे वे विद्यार्थियों के लिए बेहतर मार्गदर्शन कार्यक्रम विकसित कर सकें।
5. **मानसिक स्वास्थ्य और आत्म संतुष्टि**–यह अध्ययन जीविका चयन से संबंधित मानसिक तनाव को कम करने और विद्यार्थियों की आत्म संतुष्टि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

अतः, यह शोध न केवल अकादमिक स्तर पर बल्कि व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विद्यार्थियों, जीविका चयन परामर्शदाताओं, शैक्षणिक संस्थानों और नीति निर्माताओं को उपयोगी अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा।

शोध उद्देश्य और प्रश्न:

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि संवेगात्मक संवैगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता जीविका चयन निर्माण प्रक्रिया को कैसे प्रभावित करती है। विशेष रूप से, यह अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों पर केंद्रित होगा:

शोध उद्देश्य:

1. यह अध्ययन करना कि संवेगात्मक बुद्धि जीविका चयन निर्माण प्रक्रिया में क्या भूमिका निभाती है।
2. यह समझना कि सामाजिक दक्षता जीविका चयन को किस प्रकार प्रभावित करती है।

3. संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता के बीच संबंध को पहचानना और उसका जीविका चयन पर प्रभाव का आकलन करना।
4. उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण में इन दोनों कारकों के महत्व को स्पष्ट करना।
5. विद्यार्थियों के जीविका चयन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए नीतिगत सिफारिशें प्रदान करना।

शोध प्रश्नः

1. संवैगात्मक बुद्धि जीविका चयन की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करती है?
2. सामाजिक दक्षता जीविका चयन को किस हद तक प्रभावित करती है?
3. क्या संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता के बीच कोई पारस्परिक संबंध है?
4. क्या उच्च शिक्षा में संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता को विकसित करने से बेहतर जीविका चयन संभव हो सकते हैं?
5. विद्यार्थियों के जीविका चयन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए किन रणनीतियों को अपनाया जा सकता है?

अध्ययन की सीमाएँः

हर शोध अध्ययन की कुछ सीमाएँ होती हैं, जो इसके निष्कर्षों की व्याख्या और सामान्यीकरण को प्रभावित कर सकती हैं। इस अध्ययन की कुछ प्रमुख सीमाएँ निम्नलिखित हैंः

1. **सैद्धांतिक (Conceptual) प्रकृति**–यह अध्ययन एक संकल्पनात्मक शोध है, जिसमें कोई मात्रात्मक ;फनंदजपजंजपअमद्ध या गुणात्मक ;फनंसपजंजपअमद्ध डेटा संग्रहण शामिल नहीं है।
2. **नमूना सीमा**–इस अध्ययन में किसी विशिष्ट जनसंख्या समूह से डेटा एकत्र नहीं किया गया है, जिससे इसके निष्कर्षों को सीधे किसी विशिष्ट समूह पर लागू करना कठिन हो सकता है।
3. **संदर्भ सीमा**–अध्ययन मुख्य रूप से उच्च शिक्षा और जीविका चयन प्रक्रिया पर केंद्रित है, जिससे अन्य आयु समूहों या कार्य क्षेत्रों पर इसकी संगतता सीमित हो सकती है।
4. **सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता**–जीविका चयन को प्रभावित करने वाले कारक सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से भिन्न हो सकते हैं, इसलिए इस अध्ययन के निष्कर्ष विभिन्न समाजों पर समान रूप से लागू नहीं हो सकते।

अनुसंधान पद्धतिः

यह अध्ययन एक सैद्धांतिक ;जीमवतमजपबंसद्ध और संकल्पनात्मक (Conceptual) शोध है, जो साहित्य समीक्षा ;स्पजमतंजनतम त्मअपमूद्ध और विभिन्न सिद्धांतों के विश्लेषण पर आधारित है। इस शोध में निम्नलिखित अनुसंधान पद्धतियों का उपयोग किया गया हैः

1. **साहित्य समीक्षा** : इस अध्ययन में विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, जर्नल लेखों और विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों की समीक्षा की गई है ताकि संवैगात्मक बुद्धि, सामाजिक दक्षता और करियर निर्णय के संबंध में उपलब्ध जानकारी को संकलित किया जा सके।
2. **सैद्धांतिक ढांचा** : अध्ययन विभिन्न मनोवैज्ञानिक और सामाजिक सिद्धांतों पर आधारित होगा, जिनमें डैनियल गोलमैन की संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा और सामाजिक दक्षता से संबंधित सिद्धांत शामिल हैं।

3. **तुलनात्मक विश्लेषण** : विभिन्न शोधों और सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन करके यह समझने का प्रयास किया गया है कि संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता किस प्रकार करियर निर्णय को प्रभावित करते हैं।
4. **व्याख्यात्मक दृष्टिकोण** शोध में प्राप्त सूचनाओं का व्याख्यात्मक विश्लेषण किया जाएगा ताकि संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता के बीच संबंध को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

इस शोध पद्धति के माध्यम से अध्ययन उन प्रमुख पहलुओं को उजागर करेगा, जो करियर निर्णय प्रक्रिया को बेहतर बनाने और शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence-EI)व्यक्ति की अपनी तथा अन्य लोगों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और प्रभावी रूप से उपयोग करने की क्षमता को संदर्भित करती है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि जीविका चयन, सामाजिक संबंधों और कार्यस्थल की दक्षता को भी प्रभावित करता है।

SloveyऔरMayer (1990) ने संवेगात्मक बुद्धि कोष ''भावनाओं को सही तरीके से पहचानने, व्यक्त करने, समझने और नियंत्रित करने की क्षमता'' के रूप में परिभाषित किया। डैनियल गोलमैन (1995) ने इसे कार्यस्थल और नेतृत्व विकास में एक महत्वपूर्ण कौशल के रूप में स्थापित किया। संवैगात्मक बुद्धि के विभिन्न घटकों में स्व– अवधान (Self-Awareness),स्व–नियंत्रण(Self-Regulation), सामाजिक जागरूकता (Social Awareness)और संबंध प्रबंधन प्रमुख हैं। स्व–अवधान का तात्पर्य व्यक्ति की अपनी भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता से है। यह आत्म–निरीक्षण और आत्म–विश्लेषण पर आधारित होता है, जिससे व्यक्ति अपनी मानसिक स्थिति और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझ सकता है। स्व–नियंत्रण का संबंध व्यक्ति की अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और नकारात्मक प्रभावों को कम करने की योग्यता से होता है। यह तनाव प्रबंधन और आवेग नियंत्रण से जुड़ा होता है, जो व्यक्ति को चुनौतियों का सामना शांतचित्त होकर करने में सहायक बनाता है। इसके अलावा, सामाजिक जागरूकता एक महत्वपूर्ण घटक है, जो दूसरों की भावनाओं को समझने और उनके दृष्टिकोण को पहचानने की क्षमता को दर्शाता है। इसमें सहानुभूति और सामाजिक संकेतों को पहचानने की योग्यता शामिल होती है, जिससे व्यक्ति अपने आस–पास के लोगों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील बनता है। अंतिम घटक संबंध प्रबंधन है, जो अन्य लोगों के साथ प्रभावी रूप से संवाद करने और सकारात्मक संबंध स्थापित करने की क्षमता को इंगित करता है। यह नेतृत्व कौशल, टीम वर्क, और संघर्ष प्रबंधन से संबंधित होता है, जिससे व्यक्ति अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में अधिक सफल बन सकता है। इन सभी घटकों का समन्वय व्यक्ति की करियर सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि वे न केवल आत्म–विकास को बढ़ावा देते हैं बल्कि सामाजिक और व्यावसायिक संबंधों को भी मजबूत बनाते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि के प्रमुख सिद्धांतः

संवेगात्मक बुद्धि के अध्ययन में विभिन्न शोधकर्ताओं ने अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। इनमें Salovey Mayerऔर Daniel Goleman के सिद्धांत प्रमुख हैं।

1.SaloveyऔरMayerका मॉडल (1990)

SaloveyऔरMayer(1990) ने सबसे पहले संवेगात्मक बुद्धि की वैज्ञानिक परिभाषा दी और इसे एक संज्ञानात्मक क्षमता के रूप में प्रस्तुत किया।

संवेगात्मक बुद्धि के चार प्रमुख घटक हैं : भावनाओं की पहचान, भावनाओं का उपयोग, भावनाओं की समझ, और भावनाओं का प्रबंधन। भावनाओं की पहचान का तात्पर्य स्वयं और दूसरों की भावनाओं को चेहरे के हाव–भाव, आवाज और शरीर की भाषा से समझने की क्षमता से है। भावनाओं का उपयोग निर्णय लेने और समस्या समाधान में भावनाओं को सकारात्मक रूप से लागू करने में सहायक होता है। भावनाओं की समझ व्यक्ति को विभिन्न भावनाओं के बीच के संबंधों और उनके संभावित प्रभावों को पहचानने में मदद करती है। अंत में, भावनाओं का प्रबंधन आत्म–नियंत्रण, तनाव प्रबंधन और सामाजिक अनुकूलन शीलता के माध्यम से स्वयं की और दूसरों की भावनाओं को प्रभावी रूप से नियंत्रित करने की क्षमता को दर्शाता है। ये सभी घटक करियर निर्णय लेने और व्यावसायिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

SaloveyऔरMayerने इस सिद्धांत को **''क्षमता मॉडल''**(Ability Model)कहा, क्योंकि यह व्यक्ति की सीखने और विकसित करने योग्य मानसिक क्षमताओं पर केंद्रित है।

2. डैनियल गोलमैन का मॉडल (1995,1998)

डैनियल गोलमैन ने अपनी पुस्तक (1995) में संवैगात्मक बुद्धि को लोकप्रिय बनाया और इसे सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण कारक बताया। उन्होंने इसे पाँच प्रमुख घटकों में विभाजित किया : संवैगात्मक बुद्धि के पाँच प्रमुख घटक हैं: स्व–अवधान, स्व–नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति, और सामाजिक कौशल। स्व–अवधान का तात्पर्य अपनी भावनाओं को पहचानने और उनके प्रभाव को समझने की क्षमता से है, जो आत्म विश्वास और आत्म–जागरूकता को बढ़ाता है। स्व–नियमन व्यक्ति को अपनी भावनाओं और आवेगों को नियंत्रित करने में मदद करता है, जिससे वह अधिक लचीला, अनुशासित और जिम्मेदार बनता है।

प्रेरणा बाहरी पुरस्कारों के बजाय आंतरिक प्रेरणा पर केंद्रित होती है, जो लक्ष्य प्राप्ति, आशावाद और प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करती है। सहानुभूति व्यक्ति को दूसरों की भावनाओं और दृष्टिकोण को समझने में सक्षम बनाती है, जिससे नेतृत्व क्षमता और सामाजिक संबंधों को मजबूत किया जा सकता है। अंत में, सामाजिक कौशल प्रभावी संचार, नेतृत्व और टीम वर्क को बढ़ावा देता है, जिससे व्यक्ति वार्तालाप और संघर्ष समाधान में सफल होता है। ये सभी घटक मिलकर व्यक्ति की करियर निर्णय लेने की क्षमता और व्यावसायिक सफलता में योगदान देते हैं। गोलमैन ने इस सिद्धांत को **''व्यवहारिक मॉडल''**;ब्वउचमजमदबल डवकमसद्ध कहा, क्योंकि यह संवैगात्मक बुद्धि को व्यावहारिक कार्य स्थल और सामाजिक कौशल से जोड़ता है।

संवैगात्मक बुद्धि का शैक्षणिक और करियर पर प्रभाव :

संवैगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence -EI) केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा और करियर में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आधुनिक अनुसंधान यह दर्शाते हैं कि एक व्यक्ति की शैक्षणिक उपलब्धि, करियर चयन, कार्यस्थल की सफलता और नेतृत्व क्षमताएँ संवैगात्मक बुद्धि से सीधे प्रभावित होती हैं।

1. **शैक्षणिक प्रभाव :** संवैगात्मक बुद्धि का शैक्षणिक प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जिन छात्रों की संवैगात्मक बुद्धि अधिक विकसित होती है, वे न केवल बेहतर सामाजिक संबंध स्थापित कर पाते हैं, बल्कि अपनी भावनाओं को भी नियंत्रित करने और तनाव का प्रभावी प्रबंधन करने में सक्षम होते हैं। यह

क्षमता छात्रों की उच्च प्रेरणा, आत्म–अनुशासन और सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है, जिससे उनकी शिक्षा में रुचि बनी रहती है। शिक्षकों और सहपाठियों के साथ उनका संवाद बेहतर होता है, जिससे समूह–आधारित अधिगम अधिक प्रभावी हो जाता है।विभिन्न शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि उच्च संवैगात्मक बुद्धि वाले छात्र परीक्षा के समय तनाव को नियंत्रित कर पाते हैं और उनकी कार्यक्षमता बनी रहती है। वे अपनी भावनाओं को समझकर उन्हें सही दिशा में उपयोग कर सकते हैं, जिससे उनकी समस्या– समाधान और आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित होती है। यह न केवल उनकी शैक्षणिक सफलता में सहायक होता है, बल्कि उच्च शिक्षा और शोध में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त, संवैगात्मक बुद्धि छात्रों को परीक्षा के दबाव और असफलताओं से बेहतर तरीके से निपटने में सहायता करती है। आत्म–जागरूकता और आत्म–नियंत्रण की क्षमता उन्हें शैक्षणिक बाधाओं को पार करने में मदद करती है। यह गुण उनके मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक होता है और उनके करियर विकास को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इस प्रकार, संवैगात्मक बुद्धि शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो छात्रों की समग्र वृद्धि और करियर निर्माण में अहम भूमिका निभाती है।

2. **जीविका चयन पर प्रभाव :** करियर विकास में तकनीकी और व्यावसायिक कौशल के साथ–साथ संवैगात्मक बुद्धि की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कार्यस्थल में सफलता केवल बौद्धिक बुद्धि ;प्फद्ध पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह भी आवश्यक होता है कि व्यक्ति अपनी भावनाओं को कैसे प्रबंधित करता है और दूसरों के साथ किस प्रकार संवाद करता है। संवैगात्मक बुद्धि से संपन्न व्यक्ति अपने करियर विकल्पों के प्रति अधिक सचेत रहते हैं और आत्म–विश्लेषण के आधार पर सही निर्णय लेते हैं। वे अपने लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से समझते हैं और दीर्घकालिक करियर योजना बनाने में सक्षम होते हैं, जिससे उनके पेशेवर विकास की संभावनाएँ बढ़ती हैं। कार्यस्थल पर कर्मचारियों की उत्पादकता, नेतृत्व कौशल और टीमवर्क क्षमता भी संवैगात्मक बुद्धि से प्रभावित होती है। उच्च संवैगात्मक बुद्धि वाले कर्मचारी न केवल बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान कर सकते हैं, बल्कि वे कार्यस्थल पर उत्पन्न होने वाले विभिन्न संघर्षों को प्रभावी ढंग से हल करने की भी क्षमता रखते हैं। इससे संगठन में सहयोगी वातावरण विकसित होता है, जिससे कार्य कुशलता और संतोषजनक कार्य निष्पादन को बढ़ावा मिलता है। संवैगात्मक बुद्धि नेतृत्व क्षमताओं को भी विकसित करने में सहायक होती है। एक अच्छा नेता न केवल अपनी भावनाओं को समझता है, बल्कि अपने अधीनस्थों की भावनाओं को भी पहचानकर उनके अनुरूप कार्य करने में सक्षम होता है। इससे वह अपनी टीम को अधिक प्रेरित कर सकता है, उसे एकजुट रख सकता है और तनावपूर्ण परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकता है। इस प्रकार, कार्य स्थल पर करियर विकास में संवैगात्मक बुद्धि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो न केवल व्यक्तिगत सफलता बल्कि संगठनात्मक समृद्धि में भी योगदान देती है।

पिछले शोधों की समीक्षा–

संवैगात्मक बुद्धि पर कई शोध हो चुके हैं, जिनमें यह सिद्ध हुआ है कि इसका प्रभाव शिक्षा, करियर, और सामाजिक संबंधों पर व्यापक रूप से पड़ता है।शिक्षा में संवैगात्मक बुद्धि पर विभिन्न शोधों ने यह दर्शाया है कि यह न केवल शैक्षणिक सफलता बल्कि छात्रों के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। Parker etal (2004) के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि उच्च संवैगात्मक बुद्धि वाले छात्र

बेहतर अकादमिक प्रदर्शन करते हैं। यह भी पाया गया कि वे सहपाठियों के साथ बेहतर संबंध बनाते हैं और समूह–आधारित गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं।

इसी प्रकार,Schutte et al,(2007) के शोध में यह देखा गया कि संवैगात्मक बुद्धि परीक्षा के दौरान छात्रों की चिंता को कम करने में सहायक होती है और उनकी स्मृति क्षमता को बढ़ाती है। अध्ययन से यह भी संकेत मिला कि जिन छात्रों की संवैगात्मक बुद्धि अधिक होती है, वे अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं और कठिन विषयों को अधिक सहजता से समझ सकते हैं।इसके अतिरिक्त, Goleman(1995) ने अपने शोध में बताया कि शैक्षणिक सफलता केवल बौद्धिक बुद्धि ;फ्ब्द्ध पर निर्भर नहीं करती, बल्कि संवैगात्मक बुद्धि (EI) भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने सुझाव दिया कि स्कूलों और कॉलेजों में संवैगात्मक बुद्धि को विकसित करने वाली शिक्षा प्रणाली को अपनाया जाना चाहिए, ताकि छात्र अपने शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन में अधिक संतुलित और सफल बन सकें।

भारतीय संदर्भ में संवैगिक बुद्धि (Emotional Intelligence-EI)पर कई शोध कार्य किए गए हैं, जो कार्यस्थल और करियर पर इसके प्रभाव को उजागर करते हैं। यादव और शम्सुल (2024) ने अपने अध्ययन **"संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और व्यावसायिक चयन प्रक्रिया का अध्ययन"** में पाया कि उच्च संवैगिक बुद्धि वाले व्यक्ति करियर निर्णय लेने में अधिक सक्षम होते हैं। ये व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानने और प्रबंधित करने में कुशल होते हैं, जिससे वे व्यावसायिक विकल्पों के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं। सागर और नैयर (2021) ने अपने शोध ''बाल संप्रेक्षण गृह के अपराधी बालकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन" में संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन क्षमता के बीच संबंध का विश्लेषण किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति बेहतर समायोजन क्षमता रखते हैं, जो कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन और सहयोग में सहायक होता है। कुमार (2023) ने अपने अध्ययन "उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता का संबंध" में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि कार्यस्थल पर सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति उदारता का उच्च स्तर प्रदर्शित करते हैं, जिससे टीम वर्क और नवाचार में वृद्धि होती है। मिश्रा (2018) ने अपने शोध "संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव" में निष्कर्ष निकाला कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति शैक्षणिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। यह अध्ययन इंगित करता है कि संवेगात्मक बुद्धि कार्यस्थल पर निर्णय लेने और समस्या समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. जीविकाचयन और कार्यस्थल पर संवैगात्मक बुद्धि पर शोध

Goleman (1998) के अध्ययन में यह बताया गया कि संवैगिक बुद्धि (Emotional Intelligence-EI) वाले कर्मचारी अपने सहकर्मियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बेहतर संबंध बनाते हैं, जिससे उनकी कार्य क्षमता और व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि होती है। Côté&Miners (2006) के शोध में म् और व्यावसायिक सफलता के बीच सीधा संबंध पाया गया। अध्ययन में यह भी उल्लेख किया गया कि जो व्यक्ति उच्च म् रखते हैं, वे टीम वर्क और ग्राहक सेवा में अधिक सफल होते हैं। यादव और शम्सुल (2024) ने अपने अध्ययन "संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और व्यावसायिक चयन प्रक्रिया का अध्ययन" में पाया कि उच्च संवैगिक बुद्धि वाले व्यक्ति करियर निर्णय लेने में अधिक सक्षम होते हैं। ये व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानने और प्रबंधित करने में कुशल होते हैं, जिससे वे व्यावसायिक विकल्पों के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं। कुमार (2023) ने अपने अध्ययन "उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता का

संबंध" में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि कार्य स्थल पर सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति उदारता का उच्च स्तर प्रदर्शित करते हैं, जिससे टीम वर्क और नवाचार में वृद्धि होती है।

सामाजिक दक्षता (Social Competence)

सामाजिक दक्षता का तात्पर्य व्यक्ति की उन क्षमताओं से है, जो उसे सामाजिक वातावरण में प्रभावी ढंग से संवाद करने, अन्य लोगों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने और समाज में समायोजन करने में सहायता करती हैं। यह दक्षता किसी व्यक्ति के संचार कौशल, सहानुभूति, टीमवर्क, आत्म–नियंत्रण, समस्या–समाधान क्षमता, नेतृत्व कौशल और सामाजिक जागरूकता से जुड़ी होती है।

प्रमुख घटक :

1. सहानुभूति : दूसरों की भावनाओं और दृष्टिकोण को समझने और उनके अनुसार व्यवहार करने की क्षमता।
2. संचार कौशल : स्पष्ट, प्रभावी और संवेदनशील ढंग से संवाद करने की योग्यता।
3. टीमवर्क : समूह में सहयोग करने और टीम भावना को बनाए रखने की क्षमता।
4. संघर्ष प्रबंधन : विवादों को शांति से हल करने की कुशलता।
5. नेतृत्व क्षमता : समूह का मार्गदर्शन और प्रेरणा देने की योग्यता।
6. सामाजिक जागरूकता : सामाजिक नियमों और मूल्यों को समझना और उनके अनुसार व्यवहार करना।

सामाजिक दक्षता का जीविका चयन पर प्रभाव :

सामाजिक दक्षता का करियर विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह व्यक्ति को पेशेवर माहौल में बेहतर तालमेल बैठाने और समुचित अवसरों का लाभ उठाने में मदद करती है। सामाजिक नेटवर्किंग किसी भी पेशेवर व्यक्ति के करियर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक प्रभावी सामाजिक नेटवर्क न केवल नए अवसरों को खोजने में मदद करता है, बल्कि कार्य स्थल पर एक मजबूत समर्थन प्रणाली भी प्रदान करता है। उच्च सामाजिक दक्षता वाले लोग अधिक प्रभावी ढंग से नेटवर्किंग कर पाते हैं, जिससे वे करियर में तेजी से उन्नति कर सकते हैं। किसी भी संगठन में टीमवर्क और सहयोग की क्षमता आवश्यक होती है। सामाजिक रूप से दक्ष व्यक्ति अपने सहकर्मियों के साथ बेहतर तालमेल बैठाते हैं, जिससे कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण बनता है और संगठन की उत्पादकता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, संचार और प्रभावशीलता सामाजिक दक्षता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। सामाजिक रूप से दक्ष व्यक्ति अपनी बात प्रभावी ढंग से रख सकते हैं, जिससे वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाते हैं। यह क्षमता उन्हें नेतृत्व और प्रबंधन भूमिकाओं में अधिक सफल बनाती है, क्योंकि वे अपने सहयोगियों और अधीनस्थों के साथ बेहतर संवाद स्थापित कर पाते हैं। इसके अलावा, कार्यस्थल पर तनाव और दबाव से निपटने के लिए सामाजिक दक्षता आवश्यक होती है। आत्म–नियंत्रण और सामाजिक बुद्धिमत्ता रखने वाले कर्मचारी कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित व्यवहार बनाए रखते हैं, जिससे वे तनावपूर्ण परिस्थितियों को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं और पेशेवर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा और कार्यस्थल में सामाजिक दक्षता का महत्व :

शिक्षा और कार्यस्थल दोनों ही क्षेत्रों में सामाजिक दक्षता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

शिक्षा में सामाजिक दक्षता का महत्वः–जब विद्यार्थी अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ बेहतर संवाद स्थापित कर पाते हैं, तो वे शैक्षिक रूप से अधिक सफल होते हैं। सामाजिक दक्षता न केवल उनके

आत्मविश्वास को बढ़ाती है, बल्कि उन्हें सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित भी करती है। इसी तरह, शिक्षकों के लिए भी यह आवश्यक है कि वे अपनी सामाजिक दक्षता को विकसित करें, ताकि वे विद्यार्थियों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद कर सकें और एक सकारात्मक शिक्षण वातावरण बना सकें। सहयोगी अधिगम (Collaborative Learning)और परियोजना–आधारित शिक्षण(Project-Based Learning) जैसी शिक्षण विधियों में सामाजिक दक्षता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि ये शिक्षार्थियों को एक–दूसरे के साथ मिलकर सीखने, समस्याओं को हल करने और नवाचार को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करती हैं।

कार्यस्थल पर सामाजिक दक्षता का महत्वः– सामाजिक रूप से दक्ष कर्मचारी कार्यस्थल पर सहयोगी और समावेशी संस्कृति को बढ़ावा देते हैं, जिससे सकारात्मक कार्य वातावरण विकसित होता है। उनके प्रभावी संचार और सामूहिक सहभागिता के कारण टीम वर्क में सुधार होता है और संगठन में समरसता बनी रहती है। इसके अलावा, अच्छे सामाजिक कौशल वाले व्यक्ति नेतृत्व की भूमिकाओं में अधिक सफल होते हैं, क्योंकि वे दूसरों को प्रेरित करने, स्पष्ट निर्णय लेने और जटिल समस्याओं को हल करने में सक्षम होते हैं। कार्यस्थल पर मजबूत सामाजिक संबंध कर्मचारियों की संतुष्टि को बढ़ाते हैं, जिससे उनकी उत्पादकता में भी वृद्धि होती है और संगठन की समग्र सफलता सुनिश्चित होती है।

पिछले शोधों की समीक्षा

रिग्स और गोफ (2006) के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि सामाजिक दक्षता कार्यस्थल पर सकारात्मक संबंध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फिन, पोर और नॉरिस (2010) के शोध में पाया गया कि जिन छात्रों की सामाजिक दक्षता उच्च होती है, वे अपने करियर में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। गुलेल और मेयर्स (2012) के अनुसार, उच्च सामाजिक दक्षता वाले लोग नेतृत्व की भूमिकाओं में अधिक प्रभावी होते हैं। भारतीय संदर्भ में, सिंह (2018) के शोध में यह स्पष्ट किया गया कि शिक्षकों की सामाजिक दक्षता उनके शिक्षण कौशल और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। शर्मा (2020) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक दक्षता वाले व्यक्ति कार्यस्थल पर अधिक आत्मविश्वास से कार्य करते हैं और नेतृत्व की भूमिकाओं में अधिक सफल होते हैं।

जीविका चयन ;

जीविका चयन (Career Decision&Making) वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने करियर विकल्पों का मूल्यांकन करता है और एक उपयुक्त करियर पथ का चयन करता है। यह निर्णय कई कारकों पर निर्भर करता है, जैसे कि व्यक्ति की रुचियाँ, क्षमताएँ, अवसर, सामाजिक प्रभाव, और आर्थिक स्थितियाँ।

जीविका चयन की प्रक्रियाः–करियर निर्णय एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसमें स्वयं का आकलन, सूचना संग्रह, विकल्पों का विश्लेषण, निर्णय लेना और कार्रवाई योजना बनाना शामिल है। सबसे पहले, व्यक्ति को अपनी रुचियों, क्षमताओं, मूल्यों और लक्ष्यों का मूल्यांकन करना चाहिए, जिसमें आत्म–साक्षात्कार और करियर मूल्यांकन परीक्षण सहायक हो सकते हैं। इसके बाद, विभिन्न करियर विकल्पों की संभावनाओं का अध्ययन करना आवश्यक है, जिसमें वर्तमान बाजार की मांगों और नौकरियों की उपलब्धता की समीक्षा महत्वपूर्ण होती है। संभावित करियर पथों के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को समझना आवश्यक है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में उपलब्ध विकल्पों के आधार पर एक उपयुक्त करियर का चयन किया जाता है, जिसमें संभावित जोखिमों और अवसरों का मूल्यांकन किया जाता

है। अंततः, करियर के लिए आवश्यक शैक्षिक योग्यता और कौशल प्राप्त करने के लिए कार्रवाई की जाती है, जिसमें इंटर्नशिप, प्रशिक्षण और नेटवर्किंग के अवसरों का उपयोग किया जाता है।

जीविकाचयनके प्रमुख सिद्धांतः—करियर विकास से जुड़े विभिन्न सिद्धांत यह समझाने का प्रयास करते हैं कि लोग अपने पेशेवर जीवन में निर्णय कैसे लेते हैं और वे समय के साथ कैसे विकसित होते हैं। गिन्जबर्ग का करियर विकास सिद्धांत करियर निर्णय को एक सतत प्रक्रिया मानता है, जो कल्पनात्मक अवस्था, प्रयोगात्मक अवस्था और यथार्थवादी अवस्था के तीन चरणों में विकसित होती है। हॉलैंड का करियर व्यक्तित्व सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति का करियर चुनाव उसकी रुचियों और व्यक्तित्व के अनुरूप होना चाहिए, जिसे उन्होंने छह प्रकारों में वर्गीकृत किया—यथार्थवादी, अन्वेषी, कलात्मक, सामाजिक, उद्यमशील और परंपरागत। क्रंबोल्ट्ज का सामाजिक अधिगम सिद्धांत यह दर्शाता है कि करियर निर्णय बाहरी प्रभावों, व्यक्तिगत अनुभवों और सीखने की प्रक्रियाओं से प्रभावित होते हैं। वहीं, सुपर का जीवन काल करियर विकास सिद्धांत बताता है कि व्यक्ति का करियर निर्णय उसके जीवन के विभिन्न चरणों के अनुसार बदलता रहता है और यह उसकी पहचान से गहराई से जुड़ा होता है।

भावनात्मक एवं सामाजिक कारकों की भूमिका

जीविका चयन में भावनात्मक और सामाजिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भावनात्मक कारकों की भूमिकाः—जीविका चयन में संवेगात्मक बुद्धि, तनाव प्रबंधन, और आंतरिक प्रेरणा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को आत्म—जागरूकता प्रदान करती है, जिससे वह अपने करियर विकल्पों को बेहतर ढंग से पहचान सकता है। आत्म—नियंत्रण निर्णय प्रक्रिया को संतुलित बनाता है, जबकि प्रेरणा व्यक्ति को अपने करियर लक्ष्यों की ओर केंद्रित रखती है। करियर निर्णय से जुड़ी अनिश्चितता और सामाजिक दबाव तनाव और चिंता उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है। हालांकि, उच्च आत्म—विश्वास वाले व्यक्ति इन चुनौतियों का सामना कर बेहतर निर्णय लेते हैं। इसके अलावा, करियर की दिशा आंतरिक प्रेरणा और रुचियों से भी प्रभावित होती है। यदि किसी करियर में आंतरिक रुचि होती है, तो सफलता और संतुष्टि की संभावना अधिक होती है।

सामाजिक कारकों की भूमिकाः—जीविका चयन प्रक्रिया में पारिवारिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार का प्रभाव विशेष रूप से माता— पिता और अभिभावकों की अपेक्षाओं के रूप में प्रकट होता है, जो करियर की दिशा तय करने में सहायक हो सकते हैं। इसके अलावा, पारिवारिक पृष्ठभूमि और आर्थिक स्थिति भी करियर के अवसरों को निर्धारित करने में अहम भूमिका निभाती है। सामाजिक नेटवर्क और सहकर्मी भी करियर निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं, जहाँ शिक्षक, परामर्शदाता, और मित्र उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। सकारात्मक सामाजिक समर्थन आत्म—विश्वास को बढ़ाने और करियर की स्पष्टता प्रदान करने में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त, संस्कृति और समाज का प्रभाव करियर विकल्पों की स्वीकृति और मांग को निर्धारित करता है। लिंग आधारित रूढ़ियाँ और सामाजिक अपेक्षाएँ भी व्यक्ति के करियर चुनाव को प्रभावित कर सकती हैं, जिससे किसी विशेष क्षेत्र में जाने या उससे बचने की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है।

विद्यार्थियों के जीविका चयन में आने वाली चुनौतियाँ :

जीविका चयन प्रक्रिया में कई चुनौतियाँ होती हैं, जो विद्यार्थियों को सही विकल्प चुनने में बाधित कर सकती हैं। सबसे प्रमुख चुनौती सूचना की कमी है, क्योंकि कई विद्यार्थी अपने करियर विकल्पों और उनके संभावित परिणामों की पूरी जानकारी नहीं रखते। इसके अलावा, सामाजिक और पारिवारिक दबाव भी

एक महत्वपूर्ण कारक है, जहाँ माता–पिता और समाज की अपेक्षाएँ कभी–कभी विद्यार्थियों को अपनी पसंद के विपरीत करियर चुनने के लिए बाध्य कर देती हैं। अर्थव्यवस्था और रोजगार की अनिश्चितता भी करियर निर्णय को कठिन बना सकती है, क्योंकि आर्थिक अस्थिरता और बदलते जॉब मार्केट के कारण अवसरों की उपलब्धता प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, स्वयं की क्षमताओं और रुचियों को पहचानने में कठिनाई एक और महत्वपूर्ण चुनौती है। कई विद्यार्थी अपनी वास्तविक रुचियों और क्षमताओं को समझने में असमर्थ होते हैं, जिससे वे अपने लिए उपयुक्त करियर चुनने में असमंजस की स्थिति में रहते हैं। अंततः, करियर मार्गदर्शन की कमी भी विद्यार्थियों के करियर निर्णय को प्रभावित करती है। सही मार्गदर्शन और परामर्श की अनुपस्थिति में विद्यार्थी भ्रमित हो सकते हैं और गलत करियर विकल्प चुन सकते हैं, जिससे उनके भविष्य की संभावनाएँ प्रभावित हो सकती हैं।

पिछले शोधों की समीक्षा :

Brown & Lent (2005) के अध्ययन के अनुसार, किशोरावस्था में लिए गए करियर निर्णय भविष्य की व्यावसायिक संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। यह बताता है कि शुरुआती करियर योजना और जागरूकता का दीर्घकालिक प्रभाव होता है। Di Fabio & Kenny (2016) के शोध में यह निष्कर्ष निकला कि जिन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है, वे करियर विकल्पों का बेहतर मूल्यांकन कर पाते हैं। उनकी आत्म–जागरूकता और निर्णय लेने की क्षमता उन्हें अपने लक्ष्यों के प्रति स्पष्ट बनाती है।Hirschi (2011) के अध्ययन में यह पाया गया कि परिवार और मित्रों से मिलने वाला सामाजिक समर्थन करियर निर्णय में सहायक होता है। यह दर्शाता है कि करियर चुनाव केवल व्यक्तिगत कारकों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि सामाजिक परिवेश भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारतीय संदर्भ में, **शर्मा एवं वर्मा (2018)** के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि भारतीय छात्रों के करियर निर्णय में पारिवारिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कई विद्यार्थी अपनी पसंद से अधिक, पारिवारिक अपेक्षाओं के अनुसार करियर चुनने के लिए बाध्य होते हैं। वहीं, गुप्ता (2020) के शोध में पाया गया कि आत्म–प्रेरित छात्र अधिक संतोषजनक करियर निर्णय लेते हैं, क्योंकि वे अपने लक्ष्यों और क्षमताओं के प्रति अधिक जागरूक होते हैं।

संवैगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता का जीविका चयन में योगदान :

जीविका चयन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति को अपने कौशल, रुचियों, मूल्यों और उपलब्ध अवसरों का आकलन करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में संवैगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता दो महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक हैं, जो विद्यार्थी के जीविका चयन को प्रभावित करते हैं।

1. दोनों कारकों की आपसी अंतःक्रिया

संवैगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता एक–दूसरे के पूरक हैं।

संवैगात्मक बुद्धि के तत्वः

- आत्म–जागरूकता
- आत्म–नियंत्रण
- प्रेरणा
- सहानुभूति
- सामाजिक कुशलता

सामाजिक दक्षताके तत्व :

- संचार कौशल
- पारस्परिक संबंध
- नेतृत्व क्षमता
- टीम वर्क
- समस्या समाधान

दोनों कारकों की परस्पर निर्भरता:—संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षताएक—दूसरे पर परस्पर निर्भर कारक हैं, जो व्यक्ति के करियर निर्णय और पेशेवर सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आत्म—जागरूकता और संचार कौशलके अंतर्गत, जब व्यक्ति अपनी क्षमताओं को पहचानता है, तो वह दूसरों के साथ प्रभावी संवाद कर सकता है। इससे करियर विकल्पों को स्पष्ट रूप से समझने और अपने विचारों को आत्म—विश्वास के साथ व्यक्त करने की क्षमता विकसित होती है। सहानुभूति और पारस्परिक संबंधका संबंध इस बात से है कि उच्च EI रखने वाले व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को बेहतर समझते हैं, जिससे उनकी सामाजिक दक्षता बढ़ती है। वे टीम में कार्य करने, सहयोग बढ़ाने और सकारात्मक कार्य वातावरण बनाने में अधिक सक्षम होते हैं।नेतृत्व क्षमता और आत्म—नियंत्रणएक प्रभावी नेता की पहचान होते हैं। एक अच्छा नेता वही होता है, जो अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर टीम के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखे। आत्म—नियंत्रण से व्यक्ति तनावपूर्ण स्थितियों में संतुलित निर्णय लेता है, जिससे उसकी नेतृत्व क्षमता और व्यावसायिक दक्षता बढ़ती है।इस प्रकार, EIऔरSCकी आपसी अंतःक्रिया विद्यार्थी को करियर निर्णय लेने में आत्म—विश्वास प्रदान करती है, जिससे वे अपने लक्ष्यों के प्रति अधिक स्पष्ट और प्रतिबद्ध बनते हैं।

2. विद्यार्थियों की जीविका चयन सफलता में इनका प्रभाव

विद्यार्थियों की करियर सफलता में संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी अपनी रुचियों, क्षमताओं और मूल्यों को गहराई से समझते हैं, जिससे वे अपने करियर के लिए सही दिशा चुन सकते हैं। वहीं, सामाजिक दक्षता रखने वाले विद्यार्थी विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में अधिक जानकारी जुटाने में सक्षम होते हैं, क्योंकि वे शिक्षकों, मार्गदर्शकों और उद्योग विशेषज्ञों के साथ संवाद करने में कुशल होते हैं। करियर से जुड़ी अनिश्चितताओं का सामना करने में उच्च EI वाले विद्यार्थी बेहतर निर्णय लेते हैं, क्योंकि वे आत्म—नियंत्रण और भावनात्मक संतुलन बनाए रखते हैं। वहीं, सामाजिक दक्षता वाले विद्यार्थी सही करियर मार्गदर्शन प्राप्त करने और प्रभावी नेटवर्क बनाने में सक्षम होते हैं, जिससे वे अधिक सूचित निर्णय ले सकते हैं। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान विद्यार्थी आत्म— विश्वास के साथ इंटरव्यू में प्रदर्शन करते हैं, अपनी भावनाओं को नियंत्रित रखते हैं और अपने विचारों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करते हैं। दूसरी ओर, सामाजिक दक्षता वाले व्यक्ति टीम वर्क, सहयोग और नेतृत्व जैसे कौशलों में निपुण होते हैं, जिससे वे कार्य स्थल पर जल्दी घुल—मिल जाते हैं और सफल करियर बना पाते हैं। उच्च ब्म रखने वाले कर्मचारी कठिन परिस्थितियों में धैर्य और संतुलन बनाए रखते हैं, जिससे वे चुनौतियों का सामना कर पाते हैं। वहीं, सामाजिक रूप से दक्ष व्यक्ति संगठन में अपने सहयोगियों के साथ सकारात्मक संबंध विकसित करते हैं, जिससे कार्यस्थल का माहौल समावेशी और सहयोगात्मक बनता है। इस प्रकार, संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता विद्यार्थियों की करियर सफलता को सुनिश्चित करने में सहायक होती हैं, जिससे वे करियर विकल्पों की पहचान करने, प्रभावी निर्णय लेने, साक्षात्कार में सफल होने और कार्यस्थल में बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम होते हैं।

3. उच्च शिक्षा और रोजगार क्षमता पर प्रभाव

संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता उच्च शिक्षा में सफलता और रोजगार क्षमता को सीधे प्रभावित करते हैं। आधुनिक प्रतिस्पर्धी युग में केवल शैक्षणिक प्रदर्शन ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि विद्यार्थी की संवेगात्मक और सामाजिक क्षमताएँ भी उसके करियर निर्माण में अहम भूमिका निभाती हैं।

उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी परीक्षा तनाव को बेहतर तरीके से प्रबंधित कर सकते हैं, जिससे वे पढ़ाई में अधिक एकाग्र रहकर बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं। साथ ही, सामाजिक दक्षता रखने वाले विद्यार्थी अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ अच्छे संबंध स्थापित कर पाते हैं, जिससे उनका शिक्षण–अधिगम अनुभव अधिक समृद्ध होता है। समूह परियोजनाओं में भाग लेने से विद्यार्थियों की संचारऔर नेतृत्व क्षमता विकसित होती है, जो आगे चलकर उनके व्यावसायिक जीवन में सहायक सिद्ध होती है।

आज के प्रतिस्पर्धी जॉब मार्केट में केवल अकादमिक योग्यता ही नहीं, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता जैसी सॉफ्ट स्किल्स अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। कार्यस्थल परटीम वर्क और नेतृत्व क्षमतामहत्वपूर्ण होते हैं, और उच्च EI एवं SCवाले व्यक्ति अपनी टीम के साथ अच्छा तालमेल बना सकते हैं और नेतृत्व की भूमिकाएँ निभा सकते हैं। संकट प्रबंधन (Crisis Management) के दौरान संवेगात्मक बुद्धि मददगार होती है, क्योंकि यह व्यक्ति को तनावपूर्ण परिस्थितियों में धैर्य और संतुलन बनाए रखने में सक्षम बनाती है। इसके अतिरिक्त, ग्राहक सेवा (Customer Service) और व्यावसायिक संबंध में भी सामाजिक दक्षता एक प्रमुख भूमिका निभाती है। बेहतर संचार और संबंध–निर्माण कौशल रखने वाले व्यक्ति ग्राहकों से बेहतर संवाद स्थापित कर सकते हैं और व्यावसायिक नेटवर्क को मजबूत कर सकते हैं, जिससे उनके करियर की संभावनाएँ अधिक व्यापक हो जाती हैं। इस प्रकार, उच्च शिक्षा और व्यावसायिक दुनिया में सफलता प्राप्त करने के लिए संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता का संतुलित विकास आवश्यक है।

निष्कर्ष :

इस अध्ययन में जीविकाचयनकी प्रक्रिया मेंसंवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता की भूमिका को समझने का प्रयास किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति करियर निर्णय लेने में अधिक आत्म विश्वास महसूस करते हैं और अनिश्चितताओं का प्रभावी ढंग से सामना कर सकते हैं। वे करियर से जुड़े जोखिमों और अवसरों का संतुलित आकलन करने में सक्षम होते हैं।सामाजिक दक्षताव्यक्ति को बेहतर नेटवर्किंग और संचार कौशल प्रदान करती है, जिससे करियर के अवसर बढ़ते हैं। जो छात्र सामाजिक रूप से दक्ष होते हैं, वे करियर की संभावनाओं का बेहतर मूल्यांकन कर पाते हैं और प्रभावी निर्णय लेते हैं। सामाजिक दक्षता के घटक, जैसे टीम वर्क, लीडरशिप, और संकट प्रबंधन व्यावसायिक सफलता को प्रभावित करते हैं। संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता का संयुक्त प्रभाव करियर निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करने में सहायक होता है। एक संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को बेहतर ढंग से समझ सकता है, जिससे उसके सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। वहीं, एक सामाजिक रूप से दक्ष व्यक्ति अपने करियर लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ बना सकता है।उच्च शिक्षा और व्यावसायिक सफलता के लिए इन दोनों क्षमताओं का संतुलित विकास आवश्यक है। इस संदर्भ में, विश्वविद्यालयों में करियर काउंसलिंग, लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम, और अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। शिक्षकों और करियर काउंसलर्स को इन कारकों को समझने और विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देने हेतु विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे विद्यार्थियों की करियर योजना को अधिक प्रभावी बना सकें।

आगे के शोध के लिए संभावनाएँ

भविष्य में इस विषय पर और गहन शोध किया जा सकता है ताकि संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता के करियर निर्णय पर प्रभाव को बेहतर तरीके से समझा जा सके। शोध की संभावनाएँ कई दिशाओं में बढ़ सकती हैं। प्रायोगिक और मात्रात्मक अध्ययन के माध्यम सेEIऔर SC का करियर निर्णय पर प्रभाव मापने के लिए एक व्यवस्थित अध्ययन किया जा सकता है, जिसमें विद्यार्थियों की निर्णय प्रक्रिया को आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया जाए। सांख्यिकीय मॉडल का उपयोग कर इन कारकों की भूमिका की अधिक सटीक जांच की जा सकती है। अंतर–सांस्कृतिक अध्ययन के तहत विभिन्न देशों और सांस्कृतिक संदर्भों में EIऔर SCके प्रभाव की तुलना की जा सकती है। पश्चिमी और एशियाई देशों में विद्यार्थियों के करियर निर्णय में इन कारकों की भिन्नता को समझने से इस विषय के वैश्विक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट किया जा सकता है।लिंग आधारित अध्ययन भी एक महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र हो सकता है, जिसमें पुरुषों और महिलाओं के करियर निर्णय में EIऔर SCकी भूमिका की तुलना की जाए। क्या महिला विद्यार्थियों के करियर निर्णय में संवेगात्मक बुद्धि की अधिक भूमिका होती है? इस प्रश्न का उत्तर खोजा जा सकता है। उद्योग–केंद्रित अध्ययनके अंतर्गत विभिन्न उद्योगों (जैसे कॉर्पोरेट, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आईटी आदि) में EIऔरSCकी मांग और उनके प्रभाव को मापा जा सकता है। उच्च EIऔर SCवाले कर्मचारियों की सफलता और नेतृत्व क्षमताओं का विश्लेषण करना इस अध्ययन को और अधिक व्यावहारिक बना सकता है।

इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभावभी एक महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र हो सकता है। विश्वविद्यालयों में EIऔर SCको विकसित करने के लिए चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। क्या EIऔर SCपर केंद्रित कार्यशालाएँ विद्यार्थियों के करियर निर्णय में कोई ठोस बदलाव लाती हैं? इस पर भी शोध किया जा सकता है। अंततः, करियर परिवर्तन पर अध्ययन भी एक रोचक पहलू हो सकता है, जिसमें यह समझा जाए कि क्या EIऔर SCउन लोगों की सहायता कर सकते हैं जो करियर बदलना चाहते हैं। इसके अलावा, नौकरी में संतुष्टि और करियर विकास में इन कारकों की भूमिका को समझने से इस क्षेत्र में नए दृष्टिकोण प्राप्त किए जा सकते हैं। इन सभी संभावित शोध दिशाओं से संवेगात्मक बुद्धि और सामाजिक दक्षता के करियर निर्णय पर प्रभाव को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने में सहायता मिलेगी, जिससे विद्यार्थियों, शिक्षकों और करियर काउंसलर्स को ठोस मार्गदर्शन मिल सकेगा।

संदर्भ सूची :

बार–ऑन, आर, (2006). भावनात्मक सामाजिक बुद्धिमता (ईएसआई) का बार–ऑन मॉडल। *साइकोथेमा, 18* (अतिरिक्त अंक), 13–25।

कोटे,, एस०, एवं माइनर्स, सी०टी०एच० (2006). भावनात्मक बुद्धिमता, संज्ञानात्मक बुद्धिमता और नौकरी प्रदर्शन। *प्रशासनिक विज्ञान त्रैमासिक, 51*(1), 1–28।

गोलेमैन, डी० (1988).*कार्यस्थल में भावनात्मक बुद्धिमता* / बैंटम बुक्स।

मेयर, जे०डी० एवं सालोवे, पी० (1997).*भावनात्मक बुद्धिमता क्या है?* पी सालोवे और डी०जे० स्लूटर (संपा०), भावनात्मक विकास और भावनात्मक बुद्धिमता : शैक्षिक प्रभाव (पृ० 3–31) में। बेसिक बुक्स।

सिंह, डी० (2003).*कार्यस्थल पर भावनात्मक बुद्धिमता : एक व्यावसायिक मार्गदर्शिका* / रिस्पॉन्स बुक्स।

श्रीवास्वत, एस० एवं मिश्रा, जी० (2019). करियर निर्णय लेने में सामाजिक दक्षता और भावनात्मक बुद्धिमता। *भारतीय मनोवैज्ञानिक विज्ञान पत्रिका, 12*(2), 45–58।

शर्मा, आर०, एवं गुप्ता, पी० (2020). करियर सफलता पर भावनात्मक बुद्धिमता का प्रभाव : भारतीय कॉपरेट पेशेवरों पर एक अध्ययन। *व्यवसाय और प्रबंधन पत्रिका, 16*(4), 120–135।

कुमार, ए० एवं वर्मा, एस० (2017). कॉलेज छात्रों में करियर अनुकूलनशीलता में सामाजिक दक्षता की भूमिका। *भारतीय करियर विकास पत्रिका, 5*(1), 20–36।

त्रिपाठी, एम०, एवं शर्मा, वी० (2018). भावनात्मक बुद्धिमता और इसका नौकरी प्रदर्शन पर प्रभाव : भारतीय कार्यरत पेशेवरों पर एक अध्ययन। *अंतर्राष्ट्रीय मानव संसाधन अध्ययन पत्रिका, 8*(2), 250–270।

मिश्रा, पी० (2021). भावनात्मक बुद्धिमता, करियर निर्णय लेने कीी आत्म प्रभावशीलता और रोजगार क्षमता के बीच संबंध। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और मनोविज्ञान अनुसंधान पत्रिका, 10(1), 65–78।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* /https://www.education.gov.in से प्राप्त।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (2020). *भविष्य की नौकरियों की रिपोर्ट 2020* /https://www.weforum.org/reportsसे प्राप्त।

सिंह, पी० एवं यादव, आर० (2016). स्नातक छात्रों में सामाजिक कौशल और करियर निर्णय लेने की प्रक्रिया एक सहसम्बन्धी अध्ययन। *भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 31*(3), 75–90।

रॉबिंस, एस०पी० एवं जज, टी०ए० (2019). *संगठनात्मक व्यवहार (18वां संस्करण)*। पियर्सन।

सक्सेना, एस० एवं शर्मा, आर० (2022). करियर निर्णय लेने में भावनात्मक बुद्धिमता की भूमिका एक संकल्पनात्मक अध्ययन। *प्रबंधन अनुसंधान पत्रिका, 10*(2), 85–102।